अंग्रेज़ी का 'अलौकिक साम्राज्य'

अभय कुमार दुबे

ग्रेट ब्रिटेन में भाषाई रणनीतिकारों ने अन्य यूरोपीय भाषाओं के मुकाबले अंग्रेज़ी को कमतरी के एहसास से उबारने के लिए अट्ठारहवीं सदी में सुनियोजित रूप से काम किया। इसके साथ ही उन्होंने अंग्रेज़ी भाषा को अपनी साम्राज्यवादी विचारधारा का औज़ार बनाया। उसका मानकीकरण कर एक ऐसी भाषा के रूप में गढ़ा जो उपनिवेशवाद के पतन के बाद भी अपना एक अलौकिक साम्राज्य कायम रख सके। जिसका परिणाम है कि सांस्कृतिक और सामाजिक मानस पर अंग्रेज़ी भाषा और उसके साहित्य की हुकूमत बरक़रार है। अपने इस शोधपरक आलेख में अभय कुमार दुबे बताते हैं कि अट्ठारहवीं सदी में ब्रिटेन ने देश के भीतर बोली जाने वाली लैटिन और नॉर्मन फ्रेंच को प्रतिस्थापित कर एक तरह से देश में आन्तरिक उपनिवेश कायम किया। अंग्रेज़ी का अलौकिक साम्राज्य ब्रिटेन के भीतर और बाहर दोनों जगह विस्तृत है। सं.

...अंग्रेज़ी बोलने वाले इस देश की गिनती उत्तर (यूरोप के दक्षिणी राष्ट्रों की तुलना में) के ख़ासे अभद्र और नाममात्र के लिए ही सभ्य राष्ट्रों में की जाती है। इस देश पर उसी तरह से बर्बर होने का बिल्ला चस्पाँ किया जाता है, जिस तरह कभी यूनानियों ने बाक़ी दुनिया पर किया था। इसकी जो वजह तब थी, वही अब भी है– अपनी भाषा को विनियमित और परिष्कृत करने की ज़िम्मेदारी से कतराना।

–थॉमस शेरिडन (डिज़र्टेशन, 1762)[1]

यह उद्धरण उस कालखण्ड का प्रतिनिधित्व करता है, जिसे अट्ठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में बरतानिया में बोली जाने वाली और लिखित अंग्रेज़ी के मानकीकरण की अवधि माना जाता है। यही था वह दौर जब सेमुअल जॉनसन[2], थॉमस शेरिडन, एडम स्मिथ[3], जेम्सबरनैट (लॉर्ड मोनबोडो)[4] और ह्यू ब्लेयर[5] जैसे भाषाई रणनीतिकारों ने ग्रेट ब्रिटेन में अन्य यूरोपीय भाषाओं के मुक़ाबले कमतरी के अहसास में लिपटी हुई अंग्रेज़ी के बुनियादी किरदार पर आन्तरिक और बाह्य उपनिवेशवाद की इबारतें

[1] अंग्रेज़ी के इतिहास में थॉमस शेरिडन (1719–1788) अट्ठारहवीं सदी के बरतानिया में चलाई गई अपनी वाग्मिता परियोजना (एलोक्यूशन परियोजना) के लिए जाने जाते हैं। शुरू में वे एक मंचीय अभिनेता और थियेटर संचालक थे। इस क्षेत्र में विफल होने के बाद उन्होंने शिक्षा के क्षेत्र पर ध्यान दिया। उन्होंने अंग्रेज़ी की वक्तृता को संहिताबद्ध करने के लिए पूरे बरतानिया में घूम-घूम कर भाषण दिए, ताकि स्कॉटलैण्ड, आयरलैण्ड और वेल्स के वासी अपनी कैल्टिक भाषाओं को बोलना छोड़कर सही लहजे और उच्चारण में परिनिष्ठित अंग्रेज़ी बोलना शुरू कर सकें। इसके उपलक्ष में ऑक्सफ़र्ड और कैम्ब्रिज ने उन्हें मानद डिग्रियाँ दीं, और समाज की बड़ी हस्तियों के साथ सरकार ने भी उनकी पीठ पर अपना हाथ रखा। शेरिडन के भाषण स्कॉटिश लोगों में ख़ासतौर से लोकप्रिय थे। 1762 से 1780 के बीच उनकी कई पुस्तकें प्रकाशित हुईं, जिनमें *'लैक्चर्स ऑन एलोक्यूशन' और 'ब्रिटिश एजुकेशन : ऑर, द सोर्स ऑफ़ द डिसऑर्डर ऑफ़ ग्रेट'* ब्रिटेन उल्लेखनीय हैं। उल्लेखनीय है कि शेरिडन *'गुलिवर्स ट्रैवल्स'* के विख्यात रचयिता जोनाथन स्विफ़्ट (1667–1745) को अपना धर्मपिता मानते थे। स्विफ़्ट ने ही बचपन में उनकी अंग्रेज़ी का ख़राब आयरिश उच्चारण सुधारा था।

अंकित कीं। अंग्रेज़ी को साम्राज्यवादी विचारधारा का तत्कालीन और भविष्यगामी औज़ार बनाने की बुनियाद इसी अट्ठारहवीं सदी में ही रखी गई जो बरतानिया में भाषा-अध्ययन के अभूतपूर्व विस्फोट की सदी मानी जाती है। इस समग्र परियोजना का मक़सद था बर्बरों और अनपढ़ों की भाषा के निचले पायदान से उठाकर अंग्रेज़ी को, एक बहुमुखी और समेकित उद्यम के ज़रिए, एक ऐसी भाषा के रूप में गढ़ना, जो बरतानवी साम्राज्यवाद के पतन के बाद भी अंग्रेज़ी के अलौकिक साम्राज्य (मैटाफ़िज़िकल इम्पीरियलिज़्म) को क़ायम रख सके। दिलचस्प बात यह है कि अंग्रेज़ी के इन पक्षकारों को फ़ौजी विजयों पर आधारित बरतानिया के लौकिक साम्राज्य के अमर-अजर होने की ग़लतफ़हमी क़तई नहीं थी। वे जानते थे कि एक न एक दिन यह उपनिवेशवाद फ़ौजी और राजनीतिक रूप से पराजित होकर दुनिया के मंच से ग़ायब हो जाएगा। अंग्रेज़ी के पक्षकारों में कुछ तो ऐसे भी थे जो बरतानिया के लौकिक साम्राज्य को अरुचि के साथ देखते थे। तथापि वे चाहते थे कि भले ही यह लौकिक उपनिवेशवाद ख़त्म हो जाए, लेकिन उसके बाद भी अलौकिक साम्राज्य के रूप में मनुष्य के सांस्कृतिक और सामाजिक मानस पर उनकी भाषा अंग्रेज़ी और उसके साहित्य की हुक़ूमत बरक़रार रहे। इस लिहाज़ से अंग्रेज़ों के लौकिक साम्राज्य के मुक़ाबले अंग्रेज़ी के अलौकिक साम्राज्य की विचारधारा अपनी सांस्कृतिक उत्तर जीविता के सन्दर्भ में कहीं अधिक शक्तिमन्त और चिरन्तन साबित होने वाली थी।

भारत में अंग्रेज़ी का इतिहास उकेरने वाले इस लम्बे लेख में दिखाया गया है कि अट्ठारहवीं सदी में सक्रिय अंग्रेज़ी के इन रणनीतिकारों की विचारधारा क्या थी, और उसकी जड़ें किस तरह यूरोपीय पुनर्जागरण के उस आग्रह में निहित थीं जो समस्त विश्व को एक भाषा के बन्धन में बाँधने की स्वैर कल्पनाओं से निकला था। पुनर्जागरण की आँखें मानवता की नैसर्गिक

---

2 बरतानवी कवि, निबन्धकार, साहित्यालोचक, जीवनीकार और सम्पादक सैमुअल जॉनसन (1709–1784) को आमतौर पर डॉ. जॉनसन के रूप में जाना जाता है। उन्होंने 1755 में आठ साल तक परिश्रम करके *अ डिक्शनरी ऑफ़ द इंग्लिश लैंग्वेज* प्रकाशित की, जिसने अंग्रेज़ी के मानकीकरण की प्रक्रिया को निर्णायक रूप देने की भूमिका निभाई। अंग्रेज़ी को सुधारने के लिए जॉनसन में किस क़दर जीवट था, इसका अन्दाज़ा इस बात से लगाया जा सकता है कि जब 1746 में प्रकाशकों के एक समूह ने उनसे 'डिक्शनरी' बनाने के लिए कहा तो उन्होंने केवल तीन साल में यह काम करने का बीड़ा उठा लिया। वे फ़्राँसीसियों को इस उद्यम में पीछे छोड़ देना चाहते थे। अकादेमी फ़्राँसेस ने चालीस विद्वानों की मदद से चालीस साल में फ्रैंच भाषा की डिक्शनरी बनाई थी। जॉनसन तीन साल में तो यह काम नहीं कर पाए, लेकिन उन्होंने आठ साल में इसे ज़रूर कर दिखवाया। थॉमस शेरिडन अगर बोली जाने वाली अंग्रेज़ी के मानकीकरण के पुरोधा माने जाते हैं, तो जॉनसन को लिखित अंग्रेज़ी के मानकीकरण का श्रेय जाता है। उनका शब्दकोश अपने प्रकाशन के डेढ़ सौ साल तक अंग्रेज़ी भाषा का सन्दर्भ ग्रन्थ बना रहा, जब तक 1928 में ऑक्सफ़र्ड इंग्लिश डिक्शनरी प्रकाशित न हो गई। उनकी पुस्तक *'अ जर्नी टू द वैस्टर्न आइलैण्ड ऑफ़ स्कॉटलैण्ड'* से आन्तरिक उपनिवेशन की उस दमनकारी प्रक्रिया की झलक मिलती है, जिसके तहत स्कॉटलैण्ड वासियों को अपनी भाषा छोड़कर अंग्रेज़ी बरतने की तरफ़ धकेला गया।

3 वैसे तो स्कॉटिश अर्थशास्त्री और दार्शनिक एडम स्मिथ (1723–1790) को उनकी क्लासिक रचना *'एन इन्क्वायरी इन टू द नेचर एण्ड कॉज़ेज़ ऑफ़ द वैल्थ ऑफ़ नेशन्स' और 'द थियरी ऑफ़ मॉरल सैण्टिमैण्ट्स'* के लिए जाना जाता है, लेकिन स्कॉटिश पुनर्जागरण के पुरोधा के तौर पर स्कॉटलैण्ड के विश्वविद्यालयों में अंग्रेज़ी-अध्ययन की संस्थागत शुरुआत करवाने में उनकी प्रमुख भूमिका थी।इस लिहाज़ से कहा जा सकता है कि इंग्लैण्ड द्वारा स्कॉटलैण्ड के आन्तरिक उपनिवेशीकरण और अंग्रेज़ी के हाथों कैल्टिक भाषाओं के संहार में वे एक तरह से 'सह-अपराधी' थे।

4 लॉर्ड मोनबोडो के नाम से परिचित जेम्स बरनैट (1714–1799) भाषाई क्रम-विकास के पैरोकार थे। उनकी छह खण्डीय विराट *रचना ऑरिजिन एण्ड द प्रोग्रेस ऑफ़ लैंग्वेज (1773–1792)* ने मानवशास्त्र और भाषा-विज्ञान को जोड़ने में उल्लेखनीय भूमिका का निर्वाह किया। यह भी कहा जाता है कि बरनैट के क्रम-विकास सम्बन्धी विचारों का चार्ल्स डार्विन पर भी असर पड़ा था।

5 एडम स्मिथ के शिष्य ह्यू ब्लेयर (1718–1800) अपनी प्रमुख रचना लैक्चर्स ऑन रेटरिक एण्ड बैल्स लैटर्स (1793) के लिए जाने जाते हैं। वे भाषाओं की प्रगति को मनुष्य की बढ़ती हुई उम्र के आईने में देखते हुए दावा करते थे कि व्यक्ति जो भाषा बोलता है उसके ज़रिए उसके सभ्य होने के स्तर का अन्दाज़ा लगाया जा सकता है।

बहुभाषी प्रकृति को विकास, व्यवस्था और प्रगति के शत्रु के रूप में देखती थीं। इसी विचार के प्रभाव में अंग्रेज़ी के पैरोकार शुरू से ही इस भाषा को सम्भावित विश्व-विजेता के रूप में देखना पसन्द करते थे। इसीलिए उसके मौखिक और लिखित विन्यास को यूनानी और लैटिन की तर्ज़ पर एक 'क्लासिक' भाषा बनाने का उद्यम चलाया गया। इसके दो पहलू थे : पहला था अंग्रेज़ी थोपने के ज़रिए इंग्लैण्ड के परिधीय प्रदेशों (स्कॉटलैण्ड, आयरलैण्ड और वेल्स) का आन्तरिक उपनिवेशन करना, और दूसरा था अंग्रेज़ी के ज़रिए बाह्य उपनिवेशीकरण को सभ्यतामूलक आधार देना।

दरअसल, बरतानवी राष्ट्र-निर्माण के उपकरण के तौर पर चलाई गई अंग्रेज़ी-मानकीकरण की मुहिम अपने आप में एक साम्राज्यवादी मुहिम ही थी। भारत के सन्दर्भ में इसके पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध हैं। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रशासकों, इंजीली धर्म प्रचारकों और बरतानवी उपयोगितावाद और उदारतावाद के आंग्लवादी प्रतिनिधियों ने भारत पर अट्ठारहवीं सदी में गढ़ी गई जो अंग्रेज़ी उपनिवेशवादी सत्ता के दम पर थोपी, उसका बुनियादी किरदार भविष्य के सांस्कृतिक साम्राज्य की सम्भावनाओं का वाहक था। इस अंग्रेज़ी को गढ़ने वाले बरतानवी भाषाई रणनीतिकार अपनी परियोजना में निहित साम्राज्यवादी इरादों को व्यक्त करने के मामले में संकोचहीन थे। कई सामाजिक-व्यापारिक संस्थाओं के साथ-साथ बरतानिया की सरकार का हाथ भी उनकी पीठ पर था।

बरतानवी राष्ट्र-निर्माण के उपकरण के तौर पर चलाई गई अंग्रेज़ी-मानकीकरण की मुहिम अपने आप में एक साम्राज्यवादी मुहिम ही थी। भारत के सन्दर्भ में इसके पर्याप्त प्रमाण उपलब्ध हैं। ईस्ट इण्डिया कम्पनी के प्रशासकों, इंजीली धर्मप्रचारकों और बरतानवी उपयोगितावाद और उदारतावाद के आंग्लवादी प्रतिनिधियों ने भारत पर अट्ठारहवीं सदी में गढ़ी गई जो अंग्रेज़ी उपनिवेशवादी सत्ता के दम पर थोपी, उसका बुनियादी किरदार भविष्य के सांस्कृतिक साम्राज्य की सम्भावनाओं का वाहक था।

अट्ठारहवीं सदी के दौरान अंग्रेज़ी के मानकीकरण और इस भाषा के अलौकिक साम्राज्य के आपसी सम्बन्धों का विधिवत अध्ययन करने वाले एडम आर बीच के अनुसार :

शेरिडन जैसे चिन्तकों की कल्पना थी कि अगर अंग्रेज़ी को मानकीकृत और संहिताबद्ध किया जा सके तो... वह एक अलौकिक साम्राज्य की इमारत का बुनियादी आधार बन सकती है, एक ऐसा साम्राज्य जो भाषा और साहित्य का साम्राज्य होगा और जो वास्तविक बरतानवी साम्राज्य के अन्त के बाद भी जीवित रहेगा। अलौकिक साम्राज्य की सम्भावनाओं पर केन्द्रित रहने के कारण बरतानवी सिद्धान्तकारों को अपने रोमन अतीत के साथ एक जटिल संवाद स्थापित करने का मौक़ा मिला। जहाँ तक रोमन साम्राज्य की फ़ौजी प्रकृति का सवाल है, इन सिद्धान्तकारों को यदाकदा उसे खुलकर अस्वीकार करते हुए भी देखा जा सकता है– पर इसके बावजूद वे उसके अलौकिक साम्राज्य और लैटिन और रोमन साहित्य के निरन्तर संचार और पुनरुत्पादन की भावपूर्ण प्रशंसा करने में कभी नहीं चूके। यह महाकाव्यात्मक अलौकिक साम्राज्य इन विचारकों के लिए प्रेरणा के महान स्रोत थे। वे ऐसी कल्पनाएँ करते रहते थे कि एक दिन बरतानवी रचनाएँ उपनिवेशित रह चुके राष्ट्रों के लिए 'क्लासिक' का दर्जा हासिल कर लेंगी।[6]

शेरिडन ने एक और सूत्रीकरण किया

[6] इस बेहतरीन रचना के लिए देखें– बीच,थॉमस आर (2001), *द क्रिएशन ऑफ़ अ क्लासिकल लैंग्वेज इन द एटीन्थ सैंचुरीः स्टैण्डर्डाइज़िंग इंग्लिश, कल्चरल इम्पीरियलिज़्म, एण्ड द फ़्यूचर ऑफ़ द लिटरेरी कैनन, टेक्सास स्टडीज़ इन लिटरेचर एण्ड लैंग्वेज,* खण्ड 43, अंक 2 *(आइडियोलॉजिकल टर्न्स)* : 117–141।

था। वे बर्बर फ़ौजी ताक़त के दम पर क़ायम किए गए साम्राज्य को नीची निगाह से देखते थे। उनका विचार था कि सच्चा साम्राज्य वही होता है जिसमें फ़ौजी प्रौद्योगिकी को भाषाई प्रौद्योगिकी के साथ जोड़ने की ख़ूबी हो। इस सूत्रीकरण के ज़रिए उन्होंने अपने समकालीनों को स्पष्ट सन्देश दिया कि अगर बरतानिया ने अपनी क्लासिकल भाषा विकसित नहीं की तो भविष्य में उसका साम्राज्य बर्बर विजेताओं का साम्राज्य समझा जाएगा। केवल एक क्लासिकल भाषा ही इस साम्राज्य के वर्तमान और उत्तर-औपनिवेशिक भविष्य को सभ्यतामूलक मिशन की छवि दे सकती है। इसीलिए अंग्रेज़ी के भाषाई रणनीतिकार बरतानवी रचनाओं को पूर्व-उपनिवेशितों के बीच क्लासिक के रूप में स्थापित करना चाहते थे। इस सन्दर्भ में थॉमस बीच ने लेखन, क्लासिसिज़्म और साम्राज्यवाद के सांस्कृतिक रूपों के मध्य एक मानीख़ेज़ रिश्ते का उद्‌घाटन भी किया है। इसके मुताबिक़ चूँकि साम्राज्यवाद देश-काल के परे जाने वाली संरचना है इसलिए भाषा और साहित्य के माध्यम से अपने साम्राज्य की निरन्तरता कल्पित करने वाले रणनीतिकार लेखन को विस्मृति के ख़िलाफ़ एक कार्रवाई के रूप में देखते हैं। उनके लिए लेखन के ज़रिए रची गई क्लासिक कृति एक ऐसी छवि की नुमाइन्दगी करती है जिसकी उत्तरजीविता और चिरन्तन उपस्थिति से परिवर्तन के मुक़ाबले स्थायित्व की स्थापना होती है।[7]

बरतानिया के भाषाई रणनीतिकारों के सामने सिर्फ़ आयरलैण्ड, स्कॉटलैण्ड और वेल्स में बोली जाने वाली कैल्टिक भाषाओं को परिनिष्ठित अंग्रेज़ी द्वारा प्रतिस्थापित करने का ही लक्ष्य नहीं था। वे केवल बरतानिया राष्ट्र की बहुभाषिता, जिसे वे राष्ट्रीय एकता के लिए हानिकारक समझते थे, को समाप्त करके ही सन्तुष्ट होने के लिए तैयार नहीं थे। वे तो यूरोपीय पुनर्जागरण द्वारा थमाए गए उस विचार के अनुयायी थे जो बहुभाषिता को मानवता के लिए एक दैवी सज़ा के तौर पर देखता था।[8] रेनासाँ के चिन्तकों ने बहुभाषिता को ख़त्म करने के लिए दो तरक़ीबें प्रस्तावित की थीं। पहली, एक विश्वव्यापी कृत्रिम भाषा तैयार करना; और दूसरी, पहले से ही चली आ रही एक क़ुदरती ज़ुबान का सारी दुनिया में प्रचार-प्रसार करना। 1629 में देकार्त ने एक ऐसी कृत्रिम भाषा गढ़ने की पेशकश की जिसे सम्पूर्ण रूप से नियमित, तर्कपरक और अपविर्तनशील होना था। इसके बाद कई दार्शनिक ऐसी भाषा की कल्पनाएँ करते रहे। पुनर्जागरण द्वारा प्रस्तावित दूसरी तरक़ीब के मुताबिक़ योहान कोमिनियस ने 1631 में सुझाव दिया कि यूरोप का विन्यास दो भाषाई क्षेत्रों के रूप में किया जाए। पूर्वी यूरोप को रूसी भाषा के हवाले कर दिया जाए, और पश्चिमी यूरोप को फ्रैंच और अंग्रेज़ी आपस में बाँट लें।

छोटी भाषाएँ ख़त्म करके एक बड़ी भाषा का प्रभुत्व क़ायम करने की जो वैचारिक प्रवृत्ति रेनासाँ में दिखाई पड़ रही थी, उसका साक्षात्कार इतिहासकारों ने पूर्व-आधुनिक यूरोप में भी किया है। उन्हें सोलहवीं सदी में कैथोलिकों द्वारा किए जाने वाले इनक्विज़िशन (जो यूरोप में बारहवीं सदी से ही जारी था) के तहत समरूप ईसाई राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया में केन्द्रीकरण और एकभाषिता के शक्तिशाली आवेग दिखाई पड़े हैं। अट्ठारहवीं सदी में हुई अमरीकी और फ़्राँसीसी क्राँतियों के साथ 'एक राष्ट्र, एक भाषा और

---

[7] क्लासिसिज़्म में निहित साम्राज्यवादी अवधारणा के लिए देखें— कर्मोड,फ्रैंक (1975), *द क्लासिक : लिटरेरी इमेजिज़ ऑफ़ परमानेन्स एण्ड चेंज, वाइकिंग* प्रैस, न्यूयॉर्क। थॉमस बीच,कर्मोड के इस दावे से सहमत नहीं हैं कि क्लासिसिज़्म का यह अर्थ अट्ठारहवीं सदी के बरतानिया में अधिक प्रचलित नहीं था।

[8] पश्चिमी सभ्यता में बहुभाषिता को एक अभिशाप और दैवी दण्ड के रूप में देखने की पुरानी परम्परा है। यूनानियों की मान्यता थी कि अगर देवता हरमीज़ ने भिन्न राष्ट्रों और भाषाओं की रचना न की होती तो शान्ति और भाषाई एकता का युग न समाप्त होता। उन्नीसवीं सदी तक पश्चिमी भाषाशास्त्री बहुभाषिता के ख़िलाफ़ फ़तवे देते रहे। नोहा वैबस्टर ने भाषाई विविधता को वाणिज्य, धर्म और सामाजिक हित के ख़िलाफ़ 'सबसे बड़ी दुष्टता' क़रार दिया था।

एक संस्कृति' जैसे समरूपीकरण के सिद्धान्त का प्रचलन होने से पहले ही कई राष्ट्रों में स्वाभाविक बहुभाषिता के ऊपर एक भाषा थोपने के प्रयास होने लगे थे।[9] लेकिन पुनर्जागरणकालीन बरतानिया के पास कोमिनियस के प्रस्ताव को आधार बनाकर अंग्रेज़ी की तरफ़ से किसी तरह की यूरोपीय दावेदारी करने लायक़ आत्मविश्वास नहीं था। यद्यपि इंग्लैण्ड के उत्तरी अमरीका और कैरेबियन उपनिवेशों में अंग्रेज़ी का प्रसार होने लगा था, फिर भी बरतानिया के भीतर स्वयं अंग्रेज़ों की निगाह अपनी भाषा को कमतर मानती थी। इसके ऐतिहासिक कारण थे।

अंग्रेज़ी के बुरे दिन

अट्ठारहवीं सदी के उत्तरार्ध से पहले अंग्रेज़ी को अच्छे दिन देखने नसीब नहीं हुए। आज अंग्रेज़ी के प्रभुत्व से आक्रान्त लोगों को यह देखकर कुछ ताज्जुब हो सकता है कि बरतानिया के साम्राज्य-निर्माण की पहली दो सदियाँ अंग्रेज़ी की नहीं थीं। 1560 और 1570 के दशकों में जब क्वीन एलिज़ाबेथ के सिपाहियों ने आयरलैण्ड की ट्यूडर स्टेट पर हमला करके उसे जीता तो पहली बार बरतानिया को लगा कि वह साम्राज्य-निर्माण कर सकता है। अपने आक्रमण को न्यायोचित ठहराने के लिए बरतानिया ने आयरिशों को पशुवत, क़ानून और सुव्यवस्था से वंचित, अशिष्ट, असभ्य और अस्वच्छ क़रार देते हुए दावा किया कि ईश्वर ने उन्हें सभ्य बनाने का दायित्व इंग्लैण्ड को प्रदान किया है। आयरिश लोग कैथोलिक थे, लेकिन फिर भी प्रोटैस्टेण्ट बरतानिया ने उन्हें क़ाफ़िरों और 'पागानों' के समकक्ष रखा। ज़ाहिर है कि साम्राज्य-निर्माण की यह प्रक्रिया शुरू से ही सभ्यतामूलक थी। आयरलैण्ड से यह सिलसिला अमरीका तक पहुँचा, और इसके बाद भारत और अफ़्रीक़ा पर इसका क़हर नाज़िल हुआ।

साम्राज्य-निर्माण की विचारधारा के अध्येताओं की मान्यता है कि शुरू से ही बरतानवी उपनिवेशक स्वयं को उन रोमनों की तरह देखते थे, जिन्होंने ईसा से 55 वर्ष पूर्व जूलियस सीज़र के नेतृत्व में बरतानिया के तत्कालीन पशुचारी समाज को अपना उपनिवेश बनाकर केन्द्रीकृत राज्य के रूप में पुनर्गठित किया था। इस लिहाज़ से अंग्रेज़ सोलहवीं सदी के रोमन थे।[10] रोमन, बरतानिया को अपनी फ़ौजों के लिए अनाज सप्लाई करने वाली कड़ी के रूप में देखते थे। जल्दी ही रोमनों को अहसास हो गया कि हाईलैण्ड इलाक़ों को अपने फ़ौजी क़ब्ज़े में रखना उनके लिए लाभदायक नहीं है। इसलिए उन्होंने स्कॉटलैण्ड के हाइलैण्ड क्षेत्र और वेल्स को छोड़ दिया और इंग्लैण्ड और स्कॉटलैण्ड के लोलैण्ड क्षेत्र पर ध्यान दिया। अगले चार सौ साल तक रोमन उपनिवेश के तौर पर इंग्लैण्ड के विभिन्न इलाक़ों का, एक अपेक्षाकृत केन्द्रीकृत राज्य के रूप में विकास होता रहा। इसी दौरान अंग्रेज़ बुद्धिजीवियों के दिमाग़ पर लैटिन और यूनानी भाषाओं की धाक जमी। वे ख़ुद को सीज़र के प्रतिनिधि के तौर पर देखने के अभ्यस्त हो गए। उनकी कल्पनाओं में अंग्रेज़ी को लैटिन और यूनानी जैसी क्लासिक भाषा बनाने का ऐतिहासिक कार्यभार घर करता चला गया।

अंग्रेज़ों की यह रोमन आत्मछवि भाषा के तौर पर उन्हें अपने बीच लैटिन की क्लासिक उपस्थिति का मातहत बना देती थी। इस दौर में उन्हें अंग्रेज़ी की कोई परवाह नहीं थी। अंग्रेज़ी के इतिहासकारों के अनुसार अगर फ़्राँस के राजा फ़िलिप द्वितीय ने तेरहवीं सदी की शुरुआत में नॉर्मण्डी पर क़ब्ज़ा न कर लिया होता तो

[9] अंजली गुप्ता–बसु ने (गोठेयूनिवर्सिटी, फ्रैंकफ़र्ट : 1999) में प्रस्तुत अपने शोध प्रबन्ध *द ट्रैप ऑफ़ इंग्लिश ऐज़ यूनिवर्सल मीडियम इन कॉलोनियल एण्ड पोस्ट कॉलोनियल डिस्कोर्स इन इण्डिया* में पूर्व–आधुनिक यूरोप में बहुभाषिता पर एकभाषिता को थोपे जाने का संक्षिप्त विवरण दिया है।

[10] देखें— मेटकाफ़, थॉमस आर (2008), *द कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ़ इण्डिया : द आइडियोलॉजीज़ ऑफ़ राज*, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, बर्कले, इण्ट्रोडक्शन : 2।

बुद्धिजीवियों, पादरियों और सामन्तों द्वारा पूरी तरह से त्याग दी गई यह भाषा हमेशा-हमेशा के लिए नष्ट हो गई होती। नॉर्मण्डी जैसे ही फ्राँस के पास गया, बरतानवी राजपरिवार के सदस्यों (जो उस समय फ्राँसीसी मूल के होते थे, फ्रैंच बोलते थे और फ्रैंचभाषी यूरोपीय इलाक़ों में मौज-मज़ा करते रहते थे) को कॉण्टिनैण्टल यूरोप छोड़कर इंग्लैण्ड में स्थाईरूप से बसना पड़ा। तब कहीं जाकर बरतानवी अभिजन ने अंग्रेज़ी का व्यवहार शुरू किया। इसके बावजूद अंग्रेज़ी बहुत अरसे तक एक त्रिभाषी विन्यास में फँसी रही। इस विन्यास के तहत बरतानिया में पहले दो नम्बर की भाषाएँ लैटिन और नॉर्मन फ्रैंच थीं। उनके बाद अंग्रेज़ी का नम्बर तीसरा था। लैटिन, धर्म और बौद्धिक विमर्श की भाषा थी। नॉर्मन फ्रैंच, राजदरबार, सामन्तों और राजनीति की भाषा थी। अंग्रेज़ी का व्यवहार केवल आम लोग ही करते थे।[11] इस आन्तरिक परिस्थिति के कारण अंग्रेज़ों के लिए यह कल्पनातीत था कि अंग्रेज़ी कभी लैटिन या फ्रैंच की जगह ले सकती है। स्थिति यह थी कि दुनिया की यात्रा पर निकले यूरोपियनों से कहा जाता था कि अगर वे अफ़्रीक़ा, दक्षिण अमरीका और सुदूर पूर्व की तरफ़ जा रहे हैं तो उनके पास स्पैनी भाषा का ज्ञान होना चाहिए, और बाक़ी दुनिया में यात्रा करने के लिए उन्हें डच समझनी और बोलनी आनी चाहिए। अर्थात उस समय तक अंग्रेज़ी का अन्तरराष्ट्रीय मूल्य लगभग शून्य था।[12] अट्ठारहवीं सदी के मध्य में जब सैमुअल जॉनसन द्वारा रचित अंग्रेज़ी की 'डिक्शनरी' प्रकाशित हो गई तो अर्ल ऑफ़ चेस्टर फ़ील्ड को लगा कि अब उनके पास ऐसी गर्व करने लायक़ भाषा है, जिसे बरतानिया की सीमाओं से बाहर प्रचार-प्रसार के लिए ले जाया जा सकता है।[13] इसके बाद अट्ठारहवीं सदी का पूरा उत्तरार्ध अंग्रेज़ी को लैटिन और यूनानी जैसी 'क्लासिक' भाषा बनाने के लिए खपा दिया गया। भाषाई रणनीतिकारों को यक़ीन था कि मानकीकृत अंग्रेज़ी कैल्टिक ही नहीं, धीरे-धीरे दुनिया की कई भाषाओं को प्रतिस्थापित कर देगी।

आन्तरिक उपनिवेशवाद की 'उपयोगी हिंसा'

अंग्रेज़ी के मानकीकरण की इस परियोजना का समाहार केवल बरतानवी राष्ट्र-निर्माण की सामान्य आवश्यकताओं के तहत नहीं किया जा सकता। माइकल हैचर[14] ने विस्तार से दिखाया है कि जिस समय बरतानिया, दुनिया के सबसे बड़े औपनिवेशिक साम्राज्य के संचालक के तौर पर दुनिया भर में अपना विस्तार कर रहा था, उसी समय उसकी अपनी राष्ट्रीय सीमाओं के भीतर आन्तरिक उपनिवेशवाद स्थापित करने की प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल किस प्रकार जारी था। बरतानवी द्वीप समूह की राष्ट्रीय एकता स्कॉटलैण्ड, वेल्स और आयरलैण्ड के इंग्लैण्ड के साथ सम्पूर्ण एकीकरण के बिना स्थापित नहीं हो सकती थी। इस एकता में कई बाधाएँ थीं। इनमें से एक थी नस्लवाद। आमतौर पर नस्लवाद को श्वेत, अश्वेत, काली और पीली चमड़ी के बीच भेदभाव के रूप में चित्रित किया जाता है। लेकिन बरतानवी द्वीप समूह का नस्लवाद अनूठा था। चारों द्वीपों के वासियों के बीच चमड़ी को लेकर कोई अन्तर नहीं किया जा सकता था, फिर भी इंग्लैण्ड के एंग्लो-सैक्सन लोगों और बाक़ी तीन द्वीपों के कैल्टिक लोगों के बीच नस्लवादी नफ़रत मौजूद थी।

---

[11] इस दौर में अधिकतर अंग्रेज़ों की मातृभाषा होने के बावजूद अंग्रेज़ी का प्रयोग लिखित भाषा के तौर पर शायद ही किया जाता हो। लेखन की भाषा लैटिन थी। उसीके लेखक, प्रकाशक और पाठक थे। अंग्रेज़ी के पास तीनों में से कुछ भी नहीं था।

[12] बेली,रिचर्ड डब्ल्यू (1991), *इमेजिज़ऑफ़ इंग्लिश : अ कल्चरल हिस्ट्रीऑफ़ द लैंग्वेज*, कैम्ब्रिजयूनिवर्सिटीप्रैस, कैम्ब्रिज : 98।

[13] अंग्रेज़ी के इतिहास और पुनर्जागरणकालीन भाषाई विचार का यह अन्तर्सम्बन्ध रिचर्ड डब्ल्यूबेली (1991) ने विस्तार से दिखाया है। देखें, इस रचना का अध्याय 'वर्ल्ड इंग्लिश'।

[14] हैचर, माइकल (1975), *इण्टरनल कॉलोनियलिज़्म : द कैल्टिकफ्रिंज इन ब्रिटिश नैशनल डवलपमैण्ट*, यूनिवर्सिटी ऑफ़ कैलिफ़ोर्निया प्रैस, बर्कले।

बरतानवी राष्ट्र की गढ़न्त का इतिहास आमतौर पर इंग्लैण्ड को केन्द्र में रखता है, और कैल्ट द्वीपों को परिधि के इलाक़ों की तरह पेश करता है। यानी स्कॉट, आयरिश और वेल्स वासियों के इंग्लैण्ड में आत्मसातीकरण से ही बरतानवी राष्ट्र की रचना हो सकती थी। आत्मसातीकरण की यह प्रक्रिया फ़ौजी अभियानों, विद्रोहों के कुचले जाने, दमन और अत्याचार की बुनियाद पर चली। एकता में दूसरी बाधा थी अंग्रेज़ी, जो इंग्लैण्ड की भाषा थी, जिसके पैरोकारों द्वारा कैल्टिक भाषाओं (क्यू-कैल्टिक यानी आयरिश, मैंक्सऔर स्कॉटिश गैलिक; और पी-कैल्टिक यानी वेल्स, कॉर्निशऔर ब्रेटन) को असभ्य, भदेस और ज्ञानोत्पादन या साहित्य-रचना के लिए अनुपयुक्त माना जाता था। सैमुअल जॉनसन और उनके समकालीन विद्वान, ऑलिवर क्रॉमवेल द्वारा स्कॉटिश लोगों को ठोक-पीटकर दुरुस्त करने की कार्रवाई के समर्थक थे : 'रोमनों ने दूसरे राष्ट्रों के साथ जो किया था, वही काफ़ी हद तक क्रॉमवेल ने स्कॉट्स के साथ किया। उन्होंने स्कॉटिश लोगों को जीतकर सभ्य बनाया और उपयोगी हिंसा के ज़रिए उन्हें शान्तिपूर्वक रहने की कला से परिचित कराया।'[15] सैमुअल जॉनसन ने जब 1747 में अंग्रेज़ी भाषा का शब्दकोश बनाने का प्रस्ताव लिखा तो स्वयं को सीज़र के उन सिपाहियों के आईने में देखा जिनके कंधों पर बरतानवी द्वीप समूह के वासियों को सभ्य बनाने की ज़िम्मेदारी थी :

हालाँकि मुझे उस विजय को सम्पूर्ण करने की कोशिश नहीं करनी चाहिए, लेकिन मुझे कम से कम इतनी उम्मीद तो है ही कि मैं उसके (बरतानिया के) तट की खोज तो कर ही लूँगा, उसके निवासियों के एक हिस्से को सभ्यबना लूँगा, और दूसरे साहसिक अभियानकर्ताओं के लिए रास्ता आसान कर दूँगा ताकि वे और आगे जाकर उसे पूरी तरह अधीनस्थ करके नियम-क़ानूनों के तहत उनका स्थाई बन्दोबस्त कर सकें।[16]

जॉनसन के इस कथन की एक से ज़्यादा व्याख्याएँ की गई हैं। लेकिन एक बात सभी मानते हैं कि जॉनसन उस समय तक अंग्रेज़ी को सभ्य भाषा मानने के लिए तैयार नहीं थे, जब तक वैयाकरणों और शब्दकोश निर्माताओं और अन्य भाषा-वैज्ञानिकों द्वारा उसे नियम-क़ानूनों में बाँधकर यूनानी और लैटिन के समकक्ष न बना लिया जाए। शेरिडन के उद्धरण में हम देख ही चुके हैं कि अट्ठारहवीं सदी के उत्तरार्ध में ये भाषाई रणनीतिकार किस प्रकार अंग्रेज़ी को एक बर्बर और असभ्य भाषा के रूप में ही देखते थे। इस लिहाज़ से उनमें अपनी भाषा के प्रति कमतरी का गहरा अहसास था।

अकादमिक तर्क-योजना

शेरिडन और जॉनसन के नेतृत्व में भाषाई रणनीतिकारों की टोली ने अंग्रेज़ी को क्लासिक भाषा बनाने के लिए जिस अकादमिक तर्क-योजना का इस्तेमाल किया, उसकी एक संक्षिप्त बानगी इस प्रकार देखी जा सकती है :

इन रणनीतिकारों ने मानवशास्त्रीय अटकलबाज़ी के साथ पुनर्जागरणकालीन अधकचरे भाषाशास्त्र को जोड़कर असभ्य भाषाओं और सभ्य भाषाओं की दो श्रेणियाँ बनाईं। इसमें एडम स्मिथ, उनके शिष्य ह्यू ब्लेयर और लॉर्ड मोनबोडो ने प्रमुख भूमिका निभाई। इन विद्वानों का दावा था कि असभ्य भाषाएँ मनुष्य की आदिमावस्था की देन हैं। अमरीका के मूलवासियों का हवाला देकर कहा गया कि उनके पास चूँकि पर्याप्त शब्दों का अभाव है इसलिए उनकी भाषाओं में जानवरों के चीत्कार की ध्वनियाँ हैं, और उन्हें अपनी अतिरेकपूर्ण दैहिक भंगिमाओं के माध्यम से अपनी बात कहनी पड़ती

[15] यह उद्धरण थॉमस बीच (वही) से। उन्होंने इसे जॉनसन की रचना *अ जर्नी टू द वैस्टर्न आइलैण्ड ऑफ़ स्कॉटलैण्ड* से लिया है।

[16] यह उद्धरण भी थॉमस बीच (वही) से। उन्होंने इसे जॉनसन की रचना *द प्लान ऑफ़ अ डिक्शनरी ऑफ़ द इंग्लिश लैंग्वेज* से लिया है।

है। ब्लेयर और मोनबोडो ने भाषा के विकास को इंसान में आयु के साथ बढ़ने वाली परिपक्वता के साथ जोड़ा। इस तरह उन्होंने दिखाने की कोशिश की कि लोगों द्वारा बोली जाने वाली भाषा से पता लगाया जा सकता है कि उनके राष्ट्र का चरित्र कैसा है, उनके राज्य का ढाँचा क्या है और उनकी प्रगति का स्तर कैसा है। इस तरह की तर्क-योजना के ज़रिए यह लोग अंग्रेज़ी के मानकीकरण की आवश्यकता पर बल देना चाहते थे। साफ़तौर से अट्ठारहवीं सदी के इस भाषाई प्रयोजन में एक औपनिवेशिक स्वैरकल्पना रूपाकार हो रही थी। इस फ़ैण्टेसी में तथाकथित असभ्यों को भाषाई और सांस्कृतिक शिशुओं की तरह पेश किया जा रहा था, उन शिशुओं की तरह जिनके पास सभ्य लोगों की तरह शब्दकोश लिखने, भाषाई सिद्धान्त गढ़ने और व्याकरण तैयार करने की क्षमता हो ही नहीं सकती थी।

इस सिद्धान्तशास्त्र में सभ्य भाषाओं का दर्जा केवल यूनानी और लैटिन को दिया गया था। शेरिडन का मानना था कि इन भाषाओं के वक्ताओं का उच्चारण और लहजा शुद्ध होता है। मोनबोडो का दावा था कि होमर के ज़माने से तुर्कों के ज़माने तक, यानी तीन हज़ार साल की अवधि के बावजूद, यूनानी में कोई भी परिवर्तन नहीं हुआ है। यह विद्वान इस बात से बहुत प्रभावित थे कि यूनानी वक्तृत्वकला का अध्ययन करके रोमनों ने मात्र अस्सी साल में अपनी भाषा को सुधारकर उसका मानकीकरण कर डाला। चूँकि अन्य प्राचीन राष्ट्र ऐसी भाषा की रचना नहीं कर पाए जो देश-काल से परे जाकर उनकी संस्कृति की दावेदारियाँ पेश कर सके, इसलिए वे राष्ट्र ऐतिहासिक स्मृति से विलुप्त हो गए। यूनान ने अपनी राजनीतिक संस्थाएँ, दर्शन और विज्ञान को मिस्र और फ़नीशिया से हासिल किया, लेकिन उनके पास यूनानी जैसी क्लासिक भाषा नहीं थी। इसलिए वे इतिहास से मिट गए, और ऐतिहासिक स्मृति में यूनान ही रह गया। इसलिए ग्रेट ब्रिटेन को मिस्र और फ़नीशिया जैसा नहीं बनना है, बल्कि उसे यूनान जैसा बनना है।

इस तरह की सैद्धान्तिक आधारभूमि स्थापित करने के बाद इन विद्वानों (ख़ासकर जॉनसन और शेरिडन) ने 'अपनी भाषा के लिए थोड़ा संघर्ष करने' का आह्वान किया ताकि बरतानिया के असभ्यों को अंग्रेज़ी के मानकीकरण के ज़रिए सभ्य बनाया जा सके। वे भाषा को अधिकतम स्थिर करने के पक्ष में थे। चूँकि वे यह भी जानते थे कि भाषा में होने वाले परिवर्तनों को पूरी तरह से रोका नहीं जा सकता, इसलिए उनका कहना था कि परिवर्तन की प्रक्रिया को ज़्यादा से ज़्यादा धीमा कर दिया जाना चाहिए। यह इसलिए ज़रूरी समझा गया ताकि महान लेखकों की रचनाओं को आने वाली पीढ़ियाँ शब्दकोश और निघण्टु की मदद के बिना पढ़ सकें। शुरू में, इन आने वाली पीढ़ियों में केवल बरतानिया के लोग ही शामिल थे, लेकिन बाद में इनके साथ बरतानिया के उपनिवेशों के वासियों की पीढ़ियों को भी जोड़ लिया गया। इसके लिए उदाहरण चौसर का दिया गया जिन्हें अट्ठारहवीं सदी के पाठकगण बहुत मुश्किल से पढ़ पाते थे। कहा गया कि अगर भाषा इसी तरह बदलती रही तो आगे चलकर यही हाल शेक्सपियर और मिल्टन का भी होने वाला है। मानकीकरण की प्रक्रिया में सबसे ज़्यादा दिक़्क़त जिस बात ने पहुँचाई, वह थी अंग्रेज़ी की स्पैलिंग (वर्तनी) का सुधार। यूनानी की तर्ज़ पर भाषा-वैज्ञानिकों की मान्यता थी कि अंग्रेज़ी को भी अधिक से अधिक

मानकीकरण की प्रक्रिया में सबसे ज़्यादा दिक़्क़त जिस बात ने पहुँचाई, वह थी अंग्रेज़ी की स्पैलिंग (वर्तनी) का सुधार। यूनानी की तर्ज़ पर भाषा-वैज्ञानिकों की मान्यता थी कि अंग्रेज़ी को भी अधिक से अधिक फ़ॉनेटिक (स्वरानुकूल) बनाया जाना चाहिए। तभी अंग्रेज़ी बोलने वालों से शुद्ध उच्चारण की अपेक्षा की जा सकती है।

फ़ॉनेटिक (स्वरानुकूल) बनाया जाना चाहिए। तभी अंग्रेज़ी बोलने वालों से शुद्ध उच्चारण की अपेक्षा की जा सकती है। लेकिन जल्दी ही शेरिडन और उनकी मण्डली की समझ में आ गया कि अंग्रेज़ी को पूर्णरूपेण स्वरानुकूल नहीं बनाया जा सकता। अंग्रेज़ी को पूरी तरह से फ़ॉनेटिक न बना पाने की कमी की भरपाई शेरिडन ने अपने द्वि-खण्डीय शब्दकोश *जनरल डिक्शनरी ऑफ़ इंग्लिश लैंग्वेज. वन मेन ऑब्जैक्ट ऑफ़ विच, इज़, टू स्टैबलिश अ प्लेन एण्ड परमानैण्ट स्टैण्डर्ड ऑफ़ प्रनन्सिएशन. टू विच इज़ प्रीफ़िक्स्ड अ रेटॉरिकल ग्रामर* (1780) में हर शब्द के उच्चारण के बारे में सटीक हिदायतें देकर की। ऐसा करने वाले वे पहले शब्दकोश निर्माता थे। उनसे पहले शब्दकोशों में कुछ ही शब्दों के उच्चारण दिए जाते थे।[17]

एक प्रामाणिक राष्ट्रीय साहित्य (कैनन) कल्पित किया गया। उसे बरतानिया की सारी जनता की सम्पत्ति घोषित करने के लिए साहित्यिक उत्पादन के स्वामित्व को 'हमेशा के लिए कॉपीराइट' की श्रेणी से निकालने के क़ानूनी प्रयास किए गए। इस प्रक्रिया में एक नया सूत्रीकरण सामने आया, जिसके तहत भाषा को 'माँ' के रूप में देखने की अवधारणा उभरी। अंग्रेज़ी, बरतानवी लोगों की मातृभाषा घोषित कर दी गई क्योंकि वह भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्रामाणिक राष्ट्रीय साहित्य की वाहक थी। एक बार जब अंग्रेज़ी को बरतानवीपन की 'माँ' बना लिया गया, तो शेरिडन और जॉनसन ने इस भाषा को स्त्री-देह के आईने में देखना शुरू कर दिया। उन्होंने कहना शुरू किया कि माँ की यह देह कुछ ज़्यादा ही 'सरन्ध्र' है यानी दूसरी संस्कृतियों के शब्द इन गुंजाइशों में घुसपैठ करके इसे अपवित्र कर देते हैं। जॉनसन ने तो अंग्रेज़ी नामक इस स्त्री को एक ऐसी अनियन्त्रित देह के रूपक की तरह पेश किया जो आसानी से क्षय और विकृति का शिकार हो सकती है। अर्थात, इन विद्वानों की निगाह में, अंग्रेज़ी नामक यह माँ निकट और दूरगामी भविष्य में राष्ट्रीय साहित्य को बार-बार जन्म और पुनर्जन्म देने की ज़िम्मेदारी केवल नियन्त्रित, संयमित और व्यवस्थित करने की शर्त पर ही पूरी कर सकती थी। शेरिडन ने अपनी रचना ब्रिटिश एजुकेशन में जॉनसन की ही तर्ज़ पर 'अंग्रेज़ी' नामक स्त्री को एक ऐसी छिनाल के तौर पर चित्रित किया, जो भड़कीले फ़्राँसीसी ज़ेवरात पहनती है और वेश्या की तरह सजधज कर युवकों की कामनाओं को भड़काने के ज़रिए चारों तरफ़ संक्रमण फैलाती फिरती है। अंग्रेज़ी के मानकीकरण की ज़रूरत पर ज़ोर देने के लिए अपनाई गई इस युक्ति के ज़रिए शेरिडन अंग्रेज़ों से अपील करना चाहते थे कि अगर इस देह को पवित्र बनाए रखना है और इसे विकृतियों को जन्म देने से रोकना है तो उसे विनियमित करना ही होगा।[18] प्रामाणिक राष्ट्रीय साहित्य और उसकी चिरन्तर वाहक के रूप में परिनिष्ठित अंग्रेज़ी का यह ऐतिहासिक आख्यान हमारे सामने एक ऐसा विचार भी रखता है जिसपर हिन्दी की दुनिया में अभी तक पर्याप्त ग़ौर नहीं किया गया है। यह है साहित्य की साम्राज्यवादी भूमिका या साहित्य को साम्राज्य-रचना की प्रौद्योगिकी के तौर पर

प्रामाणिक राष्ट्रीय साहित्य और उसकी चिरन्तर वाहक के रूप में परिनिष्ठित अंग्रेज़ी का यह ऐतिहासिक आख्यान हमारे सामने एक ऐसा विचार भी रखता है जिस पर हिन्दी की दुनिया में अभी तक पर्याप्त ग़ौर नहीं किया गया है। यह है साहित्य की साम्राज्यवादी भूमिका या साहित्य को साम्राज्य-रचना की प्रौद्योगिकी के तौर पर प्रयुक्त करना।

[17] शेरिडन के उद्यम के इस पक्ष का यह ब्यौरा रिचर्ड बेली (1991) से। देखें, उनकी रचना का अध्याय *'इंग्लिश इम्प्रूव्ड'*।

[18] अंग्रेज़ी के मानकीकरण के इस पक्ष को और साम्राज्य-निर्माण के साथ उसके आन्तरिक सम्बन्ध की विशद व्याख्या के लिए देखें— सोरेनसन,जैनेट (2000), *द ग्रामर ऑफ़ एम्पायर इन एटीन्थ-सैंचुरी ब्रिटिश राइटिंग*, कैम्ब्रिज यूनिवर्सिटी प्रैस, कैम्ब्रिज।

प्रयुक्त करना।[19] इस लेख के अगले हिस्से में इसपर भारतीय सन्दर्भों में विस्तार से चर्चा की जाएगी।

अन्तर्विरोध और जटिलताएँ

जॉनसन और शेरिडन, और उनके समकालीन विद्वान, अट्ठारहवीं सदी में अंग्रेज़ी के जिस अलौकिक साम्राज्य की नींव रख रहे थे, उसकी दावेदारियों को उन्नीसवीं सदी की शुरुआत से अभिव्यक्ति मिलने लगी। लेकिन, इससे पहले कि अंग्रेज़ी का यह ऐतिहासिक आख्यान आगे बढ़े— यह स्पष्ट करना ज़रूरी है कि अंग्रेज़ी को लैटिन और यूनानी के समकक्ष 'क्लासिक' बनाने के इस संयुक्त अभियान में लगे विद्वानों के बीच छोटे-मोटे मतभेदों की प्रकृति क्या थी, और इन भाषाई रणनीतिकारों की दुविधाएँ क्या थीं।

इसमें कोई संदेह नहीं कि सैमुअल जॉनसन बरतानवी उपनिवेशवाद के आलोचक थे। अंग्रेज़ी के ज़रिए ग्रेट ब्रिटेन की जिस प्रगति की उन्होंने कामना की थी, या बरतानिया के भाषाई असभ्यों को सभ्य बनाने के लिए 'उपयोगी' हिंसा तक की वक़ालत करते हुए उन्होंने जिस आन्तरिक उपनिवेशवाद का समर्थन किया था, उसकी सीमाएँ उनकी कल्पना में ग्रेट ब्रिटेन की सीमाओं से परे नहीं जाती थीं। लेकिन, इसमें भी कोई शक नहीं कि अंग्रेज़ी के मानकीकरण ने सैमुअल जॉनसन के नेतृत्व में जिन विचारधारात्मक रूपकों को प्रचलित किया, उन्होंने आने वाली पीढ़ियों के उन अंग्रेज़ी-पक्षकारों के लिए उत्प्रेरण की भूमिका निभाई जो उनकी तरह बाह्य उपनिवेशवाद के विरोधी नहीं थे। उनके समकालीन थॉमस शेरिडन ने संकोचहीन होकर बरतानिया और उसकी भाषा की साम्राज्यिक भूमिका पर ज़ोर दिया। शेरिडन के यह विचार जॉनसन के विचारों से अन्तर्गुम्फित होकर अंग्रेज़ी के अलौकिक साम्राज्य की विचारधारात्मक आधारशिला बन गए।

> अंग्रेज़ी के मानकीकरण ने सैमुअल जॉनसन के नेतृत्व में जिन विचारधारात्मक रूपकों को प्रचलित किया, उन्होंने आने वाली पीढ़ियों के उन अंग्रेज़ी-पक्षकारों के लिए उत्प्रेरण की भूमिका निभाई जो उनकी तरह बाह्य उपनिवेशवाद के विरोधी नहीं थे।

जॉनसन जैसा अन्तर्विरोध अट्ठारहवीं और उन्नीसवीं सदी के कुछ और बरतानवी बुद्धिजीवियों और साहित्यकारों में दिखाई देता है। एक असहमत बुद्धिजीवी की आत्मछवि रखने वाले यह लोग अरुचिकर क़िस्म के बरतानवी उपनिवेशवाद के नष्ट होने की कल्पनाएँ करते थे, लेकिन उन्हें अंग्रेज़ी और उसके प्रामाणिक साहित्य की उत्तरजीविता के रूप में अलौकिक साम्राज्य के बचे रहने की सम्भावनाओं से गहरी राहत महसूस होती थी। इन्हीं में एक थीं आन्ना लैटिश्शा बारबॉल्ड, जिन्होंने अपनी बहुचर्चित कविता एटीन हण्ड्रेड एण्ड इलैवन में बरतानिया के साम्राज्य के ध्वंस की कल्पनाएँ करके 'टोरियों' को बुरी तरह से नाराज़ कर दिया था। लेकिन बारबॉल्ड इस बात से सन्तुष्ट थीं कि यूनान और रोम की तरह बरतानिया का पराजित साम्राज्य स्थिर और मानकीकृत अंग्रेज़ी भाषा के माध्यम से अपनी संस्कृति का प्रकाश फैलाता रहेगा। थॉमस कार्लाइल इसी तरह के एक और विख्यात बुद्धिजीवी थे, जिन्होंने उन्नीसवीं सदी में ही बरतानिया के उपनिवेशवाद के विनाश को कल्पित कर लिया था। बारबॉल्ड की तरह कार्लाइल भी इस बात से मुतास्सिर थे कि उपनिवेशवाद रहे या न रहे,

[19] अंग्रेज़ी में इस तरह का अनुसंधान काफ़ी उपलब्ध है। नमूने के लिए देखें— रायन,डेरमॅट (2013), *टैक्नोलॉजीज़ ऑफ़ एम्पायर : राइटिंग, इमैजिनेशन, एण्ड द मेकिंग ऑफ़ इम्पीरियल नैटवर्क्स*, 1750-1820, यूनिवर्सिटी ऑफ़ डेलावेयर प्रैस, न्यूआर्क।

उनकी मातृभाषा अंग्रेज़ी दुनिया के कोने-कोने में बरतानवी साहित्यिक संस्कृति का उत्पादन और पुनरुत्पादन करती रहेगी।

अंग्रेज़ी के मानकीकरण के इस अभियान में ऐसी शक्तियाँ भी शामिल थीं, जो 'कैल्टिक पेरिफ़री' यानी स्कॉटलैण्ड, आयरलैण्ड और वेल्स से आई थीं। जैसे, एडम स्मिथ और उनके शिष्य ह्यू ब्लेयर स्कॉटिश थे। जैनेट सोरेनसन ने दिखाया है कि बरतानिया की ग्लोबल साम्राज्यिक परियोजना में स्कॉटिश लोगों को किस तरह जूनियर पार्टनर बनाया गया। अट्ठारहवीं सदी के मध्य में जिस समय इंग्लैण्ड के बौद्धिक जगत में स्कॉटलैण्ड की हर चीज़, ख़ासकर उसकी भाषा, को नीची निगाह से देखा जाता था और स्कॉटोफ़ोबिया अपने चरम पर था, उस समय स्मिथ और ब्लेयर जैसी हस्तियों को अंग्रेज़ी का पक्ष लेने में कुछ आत्मग्लानि की अनुभूति होती थी। इसके प्रभाव में वे बीच-बीच में स्कॉटिश भाषा की प्रशंसा में भी बोलते थे। सोरेनसन के मुताबिक़, एक तरह से यह लोग 'खण्डितमनस्कता' के दौर से गुज़रते रहते थे। लेकिन, अन्ततः ऐतिहासिक परिस्थितियाँ स्कॉटलैण्ड के हाईलैण्ड क्षेत्र के मुक़ाबले उसके रोमन प्रभाव में रचे-बसे लोलैण्ड क्षेत्र के समाज को उसी सांस्कृतिक पूँजी के रुतबे के सामने नतमस्तक होने की तरफ़ ले जाती थीं, जो इंग्लैंड की देन थी। स्मिथ, ब्लेयर और स्कॉटिश ज्ञानोदय के अधिकतर हस्ताक्षर लोलैण्ड क्षेत्र के ही थे।[20]

अट्ठारहवीं सदी में किया गया 'अपनी भाषा के लिए थोड़ा संघर्ष करने' का आह्वान उन्नीसवीं सदी की शुरुआत से ही अंग्रेज़ी के विश्वविजयी किरदार के रूप में रंग लाया। अंग्रेज़ी की 'महानता' और 'क्लासिसिज़्म' की जो दावेदारियाँ सोलहवीं और सत्रहवीं सदी में कल्पनातीत थीं, और जिन्हें अट्ठारहवीं सदी में काफ़ी हिचक के साथ सम्भावनाओं की श्रेणी में रखकर बोला जाता था, वे उन्नीसवीं सदी में एक स्वयंसिद्ध तथ्य में बदल गईं। रिचर्ड बेली ने आलोचनात्मक दृष्टि से अंग्रेज़ी का सांस्कृतिक इतिहास लिखते हुए इस सदी में अंग्रेज़ी के बारे में कही गई बातों के उद्धरण सिलसिलेवार ढंग से पेश किए हैं। 1801 से 1855 के बीच के यह उद्धरण पढ़कर ऐसा लगता है कि सारी दुनिया उस समय अंग्रेज़ी पढ़ने, सीखने, बोलने और लिखने के लिए उफ़नी पड़ रही थी। कहा जा रहा था कि अंग्रेज़ी ने लोगों के दिल जीत लिए हैं और वह उनके स्नेह का पात्र हो गई है, जबकि तलवारों और तोपों से ऐसी जीत हासिल नहीं की जा सकती। सुझाव दिए जा रहे थे कि 'असभ्यों के एक राष्ट्र को अधीनस्थ करने के लिए गोला-बारूद और तोपचियों पर चालीस हज़ार पाउण्ड ख़र्च करने की बजाय ट्यूटरों और किताबों पर एक हज़ार पाउण्ड ख़र्च करना बेहतर है।' 1829 में यह दावा किया गया कि एशिया में इस भाषा को सीखने की इच्छा बहुत प्रबल दिख रही है, इसलिए अगर बिशप हेबर की सलाह मान कर समुचित सुविधाएँ उपलब्ध कराई जाएँ तो अगले पचास साल में यह हिन्दुस्तानी की जगह ले लेगी। 1846 में कहा गया कि साहित्यिक युद्ध में श्रेष्ठता हासिल करने के लिए अंग्रेज़ी दुनिया के कोने-कोने में आदिम बस्तियों में संघर्ष कर रही है। अब वहाँ के देशज वासी समृद्धि, सुधार

1801 से 1855 के बीच के यह उद्धरण पढ़कर ऐसा लगता है कि सारी दुनिया उस समय अंग्रेज़ी पढ़ने, सीखने, बोलने और लिखने के लिए उफ़नी पड़ रही थी। कहा जा रहा था कि अंग्रेज़ी ने लोगों के दिल जीत लिए हैं और वह उनके स्नेह का पात्र हो गई है, जबकि तलवारों और तोपों से ऐसी जीत हासिल नहीं की जा सकती।

[20] देखें— सोरेनसन,जैनेट (2000), वही, इण्ट्रोडक्शन।

और सत्ता हासिल करने के लिए इस भाषा को अपनाएँगे।

उन्नीसवीं सदी के यह वर्ष अंग्रेज़ी भाषा के पक्षकारों के लिए अपने हाथों से अपनी पीठ ठोकने के थे। इस दौर में एक और प्रवृत्ति देखी गई– अंग्रेज़ी बोलने वालों की बढ़ती हुई संख्या को बढ़ा-चढ़ा कर बताने की प्रवृत्ति। अंग्रेज़ी के समर्थक इस मामले में एक-दूसरे से होड़ कर रहे थे, और बरतानिया राज्य इस प्रवृत्ति को प्रोत्साहित करने के लिए पीएचडी की डिग्री देने तक के लिए तैयार था। जो जितनी चमकदार अटकल लगाता था, उसकी उतनी ही वाहवाही होती थी। यह सब अनुमानित संख्याओं का खेल था, जिनमें यह मान लिया गया था कि जहाँ-जहाँ बरतानवी उपनिवेशवाद है वहाँ-वहाँ लोग अपनी भाषाएँ छोड़कर अंग्रेज़ी अपनाते चले जाएँगे। आख़िरकार, पक्षकारों को इस बात में कोई सन्देह ही नहीं था कि उनकी भाषा सबसे सरल, सबसे सुन्दर, हर तरह के विचारों को व्यक्त करने में सबसे अधिक सक्षम होने के साथ-साथ निर्विवाद रूप से कला और विज्ञान की, व्यापार और वाणिज्य की, सभ्यता और धार्मिक स्वतन्त्रता की भाषा है। यह दावा बार-बार किया जाता था कि अंग्रेज़ी में विभिन्न तरह के ज्ञान का भण्डार है, जिसकी वजह से अंग्रेज़ी अपनाने वाला राष्ट्र सभ्यता और ईसाइयत के दायरे में आ जाता है। अंग्रेज़ी के एक समर्थक ने तो यहाँ तक कह दिया कि जो अंग्रेज़ी नहीं जानता वह उसी तरह से वंचित और दुखी है जिस तरह से ग़रीबी और अकाल के मारे होते हैं।[21]

---

[21] उन्नीसवीं सदी में अंग्रेज़ी के समर्थन में कही गई बातों के विश्लेषणात्मक संकलन के लिए देखें– बेली,रिचर्ड (1991), वही, अध्याय *'वर्ल्ड इंग्लिश'*।

अभय कुमार दुबे वरिष्ठ पत्रकार एवं समाज विश्लेषक हैं। विगत दो दशक से विकासशील समाज अध्ययन पीठ (सी एस डी एस) दिल्ली में भारतीय भाषा कार्यक्रम के सीनियर फेलो हैं एवं हिन्दी शोध पत्रिका *प्रतिमान* के सम्पादक हैं।
सम्पर्क : abhaydubey@csds.in